ARYA SAMAJ (VEDIC MISSION) WEST MIDLANDS
321 Rookery Road, Handsworth
Birmingham B21 9PR
Tel : 0121 359 7727
enquiries@arya-samaj.org
www.arya-samaj.org
Charity Registration Number : 1156785

What is Arya Samaj?

Arya Samaj founded by Maharishi Dayanand Saraswati is an institution based on the teachings of Vedas for the welfare of universe. It propagates the universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 44 | 03/2022-23 | MONTHLY | March 2022

Dates for your diary
(Festivals celebrated at Arya Samaj Bhavan)

Festival	Date	Time
Rishi Bodhotsav	**Sunday 6th March 2022**	**11am – 1pm**
Holi	**Sunday 20th March 2022**	**11am – 1pm**
Volunteers Meeting	**Sunday 20th March 2022**	**1pm – 3pm**
Arya Samaj Foundation Day (Launch of new book ''Major (80%) Role of Arya Samaj in Freedom Struggle of Bharat'') **& Ram Navmi**	**Sunday 10th April 2022**	**11am – 1pm followed by Rishi Langar (hot vegetarian lunch)**
New Time for Day Centre	**Every Wednesday**	**12pm - 3pm**

321 Rookery Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR.
Tel - 0121 359 7727 **Charity registration number 1156785**
E-mail - enquiries@arya-samaj.org **Website - www.arya-samaj.org**

CONTENTS

10 Principles of Arya Samaj	3
The fundamental feature of water is coolness - Vimal Wadhawan Yogachary	4
महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य में राष्ट्रीयता- - आचार्य डॉ. उमेश यादव	5
Life of Maharishi Dayanand Saraswati – By Dr. Narendra Kumar	9
७३वाँ भारतीय गणतंत्र दिवस समारोह- विवरण- आचार्य डॉ. उमेश यादव	12
Volunteers and Youth Involvement Meeting at Arya Samaj Bhavan	16
Children's Corner – The Greedy Jackal	17
Fee for services provided by Arya Samaj West Midlands	18
News (पारिवारिक समाचार)	19
Emerency Funding for Tower	21
Members who pay donations by standing order	22
Weekly services details	23
Meeting for Voluntees	25
Your Arya Samaj is here to help you in "Your Hour of Need"	25

NEW HOURS

For General and Matrimonial Enquiries Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)
Monday – 12. 30pm to 6.30pm,
Wednesday: - 10.30am to 4.30pm.
Thursday – 2.30pm – 8.30pm
Bank Holidays – Closed
Tel. 0121 359 7727

321 Rookery Road, Handsworth, Birmingham, B21 9PR.
Tel - 0121 359 7727
Charity registration number
1156785
E-mail
enquiries@arya-samaj.org
Website
www.arya-samaj.org
facebook
https://www.facebook.com/aryasamajwestmidlands/

10 Principles of Arya Samaj

1. **God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means. (At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rig Ved, Yajur Ved, Sam Ved and Atharva Ved contain all true knowledge, spiritual and scientific, known to the world.)**

2. **God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**

3. **Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**

4. **All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**

5. **All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**

6. **The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**

7. **All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**

8. **We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**

9. **One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**

10. **In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights**

"The fundamental feature of water is coolness."

Apsu me somo abraveedantarvishvani bheshjaa. Agnim cha vishvashambhuvamaapashcha vishvabheshajeeh. Rigveda 1.23.20

अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशं भुवमापश्च विश्वभेषजीः।। ऋग्वेद १. २३.२०

(Apsu) Water (me) for me (somah) king of all medicine, God, moon (abraveeta) established, famous for (antah) in (vishvani) all (bheshjaa) medicines (Agnim) in fire (cha) and (vishva shambhuvam) for the welfare of all (aapah) water (cha) and (vishva bheshajeeh) all medicine.

Elucidation

"The fundamental feature of water is coolness."
Is hot water more useful?
God has established the coolness of moon in water for me. Thus, water is established and famous for all purpose medicine. When water is kept upon fire i.e., heated, it becomes a more useful medicine for the welfare of all.

Practical Utility in life

"Our elders are basically cool for us."
How should we take the anger of elders?
Water, due to it's feature of coolness, is regarded as a great consumable element of nature. But when heated, it becomes a lot more useful medicine for the welfare of all. Water is a strange combination of coolness, it's basic property, and strength, the basic property of fire. In hot water, medicinal properties increase in many ways. Water is for our good health, whereas hot water is to treat our ailments.
Our elders, superiors and all great spiritual and social leaders are very cool for us when we follow their advice and commands. But when we fall sick mentally and disobey them, we should take their anger, like hot water, simply as a medicine to treat us to put our mind on the right track.
Coolness of our elders is for our guidance, whereas their anger is like a medicine to put us on right track.

By Vimal Wadhawan Yogachary
Advocate, Supreme Court of Ind

महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य में राष्ट्रीयता-

आचार्य डॉ उमेश यादव

यजुर्वेद ३८.४- "क्षत्राय पिन्वस्व" का अर्थ व भाव विस्तार इस प्रकार किया -"हे महाराजाधिराज परब्रह्मन् ! अखण्ड चक्रवर्त्ती राज्य के लिये शौर्य, धैर्य, नीति, विनय, पराक्रम और बलादि उत्तमगुणयुक्त कृपा से हमलोगों को यथावत् पुष्ट कर, अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों । व्याख्या में महर्षि लिखते हैं-" मनुष्यैर्द्वाभ्यां प्रयोजनाभ्यां प्रवर्तितव्यमेकमत्यन्तपुरुषार्थशरीरारोग्याभ्यां चक्रवर्त्तीराज्यश्रीप्राप्तिकरणम्, द्वितीयं सर्वा विद्या: सम्यक् पठित्वा तासां सर्वत्र प्रचारी करणम् ।" - अर्थात् मनुष्यों को दो प्रयोजनों की पूर्ति के लिए सदा पुरुषार्थपूर्वक व्यवहार करना चाहिये-१. शरीर से रोगमुक्त हो, बलवान हो और चक्रवर्त्ती राज्य श्री को प्राप्त करने वाला हो २. सब विद्याओं को अच्छी तरह पढ़कर उनका सर्वत्र प्रचार करने वाला हो ।

अपनी महत्त्वपूर्ण प्रार्थनामूलक पुस्तक "आर्याभिविनय" के कुछ प्रसंग - वस्तुत: आर्याभिविनय भी महर्षि दयानन्द द्वारा रचित एक ऐसी स्तुति-प्रार्थनोपासना की पुस्तक है जिनमें लगभग चारों वेदों से चुने हुये कुछ महत्त्वपूर्ण मंत्र हैं जिनकी व्याख्या सरल भाषा में की है । यत्र-तत्र स्वराष्ट्र की भावनाओं को उन्होंने अपने मन में उभारा और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के आगे रख दिया । इन सन्दर्भों से उनका स्वराज्य, स्वराष्ट्र व स्वदेशाभिमान व प्रेम को सीधा व स्पष्ट समझा जा सकता है ।

आर्याभिविनय-१.१६- "हे न्यायकारिन्, जो कोई हम धार्मिकों से शत्रुता करता है, उसको आप भस्मीभूत करें, और विद्या, शौर्य, धैर्य, बल, पराक्रम, चातुर्य, विविधधन, ऐश्वर्य, विनय, साम्राज्य, सम्मति, सम्प्रीति तथा स्वदेशसुखसम्पादनादि गुणों से युक्त करके हमको सब देहधारियों में उत्तम बनायें और सबसे अधिक आनन्दभोग करने, सब देशों में इच्छानुकूल विचरने, और आरोग्य देह, शुद्ध मानसबल तथा विज्ञान आदि की प्राप्ति के लिये हमको सब विद्वानों के मध्य प्रतिष्ठायुक्त करें ।

आर्याभिविनय-१.४३ -"हे महाधनेश्वर ! हमारे शत्रुओं के बल पराक्रम को(आप)

सर्वथा नष्ट करें, आपकी करुणा से हमारा राज्य और धन सदा वृद्धि प्राप्त हो ।

"इस प्रकार अनेक स्थानों पर महर्षि दयानन्द ने अपने भाष्यों में प्रकरणानुसार ईश्वर को जगदीश्वर, राजा, राजेश्वर, साम्राज्य प्रसारक, राज्य विधायक, सम्राट तथा महाराजाधिराजेश्वर आदि श्रेष्ठ राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत सम्बोधनों से पुकारा है | महर्षि चाहते थे कि प्रार्थना आदि आध्यात्मिक प्रक्रियाओं में भी भारत की प्रजा स्वराष्ट्र के स्वाभिमानी बने ।

वायसराय लॉर्ड नोर्थ ब्रुक से मेल- १६ दिसम्बर १८७२ महर्षि दयानन्द कलकत्ता पहुँकर प्रचार के ख्याल से राजा ज्योतीन्द्र मोहन टैगोर के प्रसिद्ध प्रमोद कानन /वन/वाग में रुककर मार्च १८७३ ई. तक वैदिक विचारों के माध्यम से राष्ट्र-गौरव का प्रचार-प्रसार करते रहे । नगर के बड़े पदों पर आसीन ऑफिसर, राज-परिवार और प्रतिष्ठित जन महर्षि के विचार सुनने आया करते थे । उसी क्रम में तत्कालीन वायसराय लॉर्ड नोर्थ ब्रुक महर्षि विचारों से प्रभावित होकर एक दिन वे स्वयं महर्षि दयानन्द से मिले और लम्बी सम्मानपूर्वक वार्त्तालाप की । तभी वायसराय ने महर्षि से निवेदन किया कि - "देखो हमारे राज्य में कितना सुख एवं न्याय है कि आप जैसे लोगों को वेखट दूसरों के विचारों का खण्डन करते हैं , किसी से भी भय वा खतरा नहीं है, अत: आप प्रतिदिन ईश्वर से भारत में हमारे राज्य की चिरकालपर्यन्त स्थिरता के लिये प्रार्थना कर दिया करें ।"

महर्षि का उत्तर - उस समय महर्षि दयानन्द का उत्तर निश्चय ही स्वराष्ट्र-प्रेम का परिचायक ही नहीं अपितु समस्त भारतीयों के अन्दर स्वदेश के लिये एक अमिट प्रेम गंगा बहाने में सक्षम है । निर्भिक् संन्यासी भारत के गौरव महर्षि दयानन्द ने भारत में स्थापित ब्रिटिश सत्ता के सर्वोच्च पदाधिकारी उस वायसराय को तपाक से कहा- "राजन्! मैं तो प्रतिदिन प्रात:काल उठकर अपने परमपिता परमेश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि शीघ्रतातिशीघ्र यह राज्य भारत से उठ जाये, मैं तो शीघ्र ही वह दिन देखना चाहता हूँ जबकि भारत का शासनसूत्र हम भारतीयों के हाथ में हो ।" वायसराय को महर्षि के ऐसे निर्भयता व वीरतायुक्त उत्तर की ऐसी उम्मिद न थी । सुनकर वह चकित रह गया । उस वायसराय ने इण्डिया ऑफिस को भेजे गये पत्रों में एक पत्र यह भी लिखा कि इस "विद्रोही फकीर पर कड़ी नजर रखी जाये ।"

दैनिक वीर अर्जुन दिल्ली९.४.६१ में प्रकाशित श्री दीवान अलखधारी जी का लेख, पृ.९-भा. स्वातंत्र्य में आ.स. का योगदान- आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री-हिसार -द्रष्टव्य कालान्तर में महर्षि के इन्हीं विचारों से भारत का वच्चा-वच्चा जग गया जिससे एक यही वायसराय को लन्दन हाउस में सिफारिश करनी पड़ी कि अब हमें भारत को छोड़ देना चाहिये जिससे भारत से ब्रीटिश राज्य हटा लेने का प्रस्ताव पास हो गया । इन्हीं की प्रशंसा में राष्ट्रीय गीत आज तक गाया जाता है- "जन गण मन... भारतभाग्य विधाता" असली भाग्यविधाता तो महर्षि दयानन्द थे जिन्हें हम आज "राष्ट्रपितामह" कहें तो अतिशयोक्ति न होगी ।

असहयोग आन्दोलन का वीज-विदेशी राज्य पर महर्षि दयानन्द को कभी विश्वास न था । भारत की सम्पदा को विदेशी लूट रहे थे । पक्षपात पूरे रुप से उनके भारतीयों के प्रति प्राय: न्याय में दिखता था । यहाँ तक कि परोपकारिणी सभा के स्वीकारनामे में भी महर्षि लिखते है-" जहाँ तक हो सके, न्यायप्राप्ति के लिये सरकारी अदालत का दरवाजा न खटखटाया जाये । वस असहयोग आन्दोलन का वीज महर्षि ने यहीं बो दिया जिसका प्रभाव कालान्तर में दिखा । -भा.स्वा. में आ.स. का योगदान-आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री-पृ.९.

ब्रिटिश अदालतों पर अविश्वास महर्षि दयानन्द के इन वाक्यों से और अधिक स्पष्ट हो जाता है-स.प्र.१३वाँ समु. पृ.७७ देखें -"अनुमान होता है इसीलिए ईसाई लोग ईसाइयों का बहुत पक्षपातकर किसी गोरे ने काले को मार दिया हो तो भी बहुधा पक्षपात से निरपराधी कर छोड़ देते हैं ।"

नोन व पौन रोटी पर कर- महात्मा गाँधी ने नमक कानून की बात १९३० के सत्याग्रह में कही पर महर्षि दयानन्द ने १८७५ में ही सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण पृ. ३८४-८५ पर लिखा कि नमक तथा पौन रोटी पर जो टैक्स अंग्रेजी सरकार लगाती है वह उचित नहीं है । इससे गरीबों को अत्यन्त कष्ट होता है । गरीब घास काटते हैं व लकड़ी का बोझ बनाते हैं उस पर भी सरकार नमक व पौन रोटी पर कर लगाती है सो निश्चित ही गरीबों के लिये कष्ट का कारण है । जो कमाये उस पर एक रोटी में पौन रोटी तो सरकार ही ले ले तो गरीब कैसे अपना भरण-पोषन करेंगे यह चिन्ता महर्षि दयानन्द को थी अत: नोन व पौन

रोटी कर का विरोध किया । इसी तरह कागज पर सरकार महंगा दाम लेती थी वह भी भारतीयों लोगों के लिये दु:खदायी था, सत्यार्थ प्रकाश में वहीं इसका भी विरोध किया । इस तरह हम यह पाते हैं कि जिन मूलभूत भारतीय लोगों की समस्याओं को महर्षि दयानन्द ने उठाया था उन्हें ही बाद में भी गाँधी आदि ने भी उठाया है । यह अच्छी बात है पर महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीय भावनाओं का स्थान सब लोग उचितरुप में जाने ।

महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण- अंग्रेजी राज्य को जड़ से खत्म करने में आर्य समाज की विचारधारा पूर्णरुप से सक्षम है- ११वाँ समु. आर्यसमाज-विषय- देखें - "इसलिये जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्य्य समाज' के साथ मिलकर उनके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा । क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना; अब भी पालन होता है; आगे होगा; उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें । इसलिये जैसा आर्य्य समाज आर्य्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता । यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवो तो बहुत अच्छी बात है क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है; एक का नहीं ।"

महर्षि अपने इन स्पष्ट मान्यताओं के आधार पर ही अंग्रेजी राज्य में भी आर्य समाजों की स्थापना उन स्थानों पर जानबूझकर अवश्य की जहाँ अंग्रेजी सरकार का मुख्य सेना-कार्यालय हुआ करता था जैसे- बम्बई, मेरठ, लाहौर, सहारणपुर, पटना आदि । आर्य समाज के विचार सेनाओं तक जाये और भारतीय मूल के सेनाओं में स्व देश की भावना जागे ताकि वे अपने देश के लिये अंग्रेजों से लड़ने में साहस ला सकें । महर्षि दयानन्द १८५५ से १८६० तक और फिर १८६३ से १८७१ तक खूब घूम-घूम कर सब को सब जगह भारत के स्वतंत्रता की प्रेरणा देते रहे, कभी ज्ञात
रुप तो कभी अज्ञात रुप होकर जिसका प्रभाव १८५७ के युद्ध काल में हम मंगल पांडे, तांत्या टोपे, नाना साहब पेशवा, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, बिहार के वीर कुंवर सिंह आदि सब वीरों ने अंग्रेजों को छके हुड़ाये, यद्यपि अंगेजी शासन फिर भी चलता रहा और आंन्दोलन भी बढ़ता रहा, आगे से आगे भारत के वीर-वीरांगनायें इस संग्राम में एक पर एक साथ जुड़ते गये, तब महर्षि दयानन्द का आर्यावर्त्तीय वैदिक प्रभाव सब पर अमिट रुप से पड़ा ।

LIFE OF MAHARISHI DAYANAND SARASWATI

Early Life

Maharishi Dayanand Saraswati was born on 12th February year 1825 in a town named Tankara in the Morbi district of State of Gujarat in Bharat (India). The name of his father was Karshan Lalji Tiwari and mother Shrimati Yasodabai Tiwari. Karshanji was a Brahamin by cast and a devotee of Shiv Ji. Parents named their son Mool Shankar.

At the age of 14 years, Mool Shankar was asked by his father to observe fast on the occasion of Shivratri. With full devotion and belief, young Mool Shankar decided to observe fast. In the evening his father took him to the local temple for worship and celebration of Shivratri. The first 6 hours of the evening was celebrated with lot of joy and enthusiasm. After the midnight, the priest of the temple, father of Mool Shankar and other people fell to sleep. But young Mool Shankar stayed fully awake in the excitement. In the meantime few mice started going up and down on the Shiv Ling (idol of Lord Shiva) and started eating the offerings to Lord Shiv. Young Mool Shankar was shocked to see this scene. He knew then and there that this Shiv Ling can not be a true Almighty God because he was unable to protect himself from the little mice. He asked his father and other people about how this incidence could happen. But no one could satisfy him. The death of his younger sister and his favourite uncle created a big curiosity in the young mind of Mool Shankar. He was determind to find the real Almighty God. Observing the disenchantment of Mool Shankar, his parents

decided to get him married. Mool shankar did not want to get married at all.

Leaving Home

In order to get away from persistent demand of his parents to get married and to find the real Almighty God, at the age of 21 years Mool Shankar left home for good.

Initially he wondered around in differents cities, visiting various religious places, walking along the banks of various rivers, jungles and Himalayan Mountain range for years. Shri Parmanand Saraswati initiated this young Brahmachari into Sanyas Ashram and gave him a name of Swami Dayanand Saraswati
According to various evidence available, during period of year 1855-1857, Swami Dayanand Saraswati spent time meeting and encouraging important people who took part in the Indian mutiny of year 1857.

Learning about Vedas under his Guru Swami Virjanand Saraswati

On 14th November 1860, Swami Dayanand arrived in the city of Mathura. He visited Swami Virjanand Saraswati and requested him to accept him as his pupil. For two and half years, Swami Dayanand Saraswati learned about Panini Ashtadhyayi grammar, Mahabhashya, Nirukta and Nighantu. After learning these books, Swami Dayanand was fully prepared to read and fully understand the true meanings of Ved Mantras.

After nearly two and half years of learning from his Guru Swami Virjanand, Swami Dayanand offered half a seer of Clove as his “Guru Dakshina” to his Guru to express his gratitude towards him. Then Swami Virjanand said, “I demand from you something else as Dakshina. Take a vow before me that so long as you will live, you shall work incessantly (constantly and without interruption) to spread Aarsh literature and a true knowledge of the Vedas, and condemn works which teach false doctrines and tenets, and that you shall even give up your life if necessary, in re-establishing the Vedic

religion. This is my Dakshina". Dayanand heard it, bowed and said, Tathastu "So be it".

In May 1864, Swami Dayanand travelled to the city of Agra where he spent about 2 years for further study of Vedas and prepare himself for the gigantic work as requested by his Guru.

Propagation of true teachings of Vedas in public

Maharishi Dayanand Saraswati travelled up and down various cities of Bharat, propagating the true teachings of Vedas in order to re-establish the true Vedic religion in Bharat, educating the people of benefits of independence from British rule and establish their own government, fighting for the welfare of the women through education, right for women to study all 4 Vedas, stop prevalent child marriages and strongly advocate for the re-marriage of young widows and to stop cow slaughter in Bharat etc.

Foundation of Arya Samaj

He laid down the foundation of the very first Arya Samaj in the city of Bombay, Bharat on 7th April 1875. He wrote "10 Principles of Arya Samaj".

He wrote several books. But his 3 books named Satyarth Prakash, Sanskar Vidhi and Rigvedadi Bhashya Bhumika are immortal and very invaluable. In his Sanskar Vidhi book, he wrote in detail about 16 Sacraments (Solah Sanskars) thus standardising these rituals of Sacraments for generations to come.

Death

Because of his fight against idol worship and a determined, undeviating and uncompromising approach towards the false religious teachings and various prevailing superstitions, he made lot of enemies. He was totally against prevailing British Rule in Bharat at that time. So he was poisoned several times. Eventually due to serious poising, he died on the occasion of Diwali evening of 30th October 1883 in the city of Ajmer, Bharat.

By Dr. Narendra Kumar

७३वाँ भारतीय गणतंत्र दिवस समारोह- विवरण

आचार्य डॉ उमेश यादव

बहुत ही हर्ष के साथ उपर्युक्त समारोह का विवरण प्रस्तुत है । दिनाँक ३० जनवरी २०२२ को यह समारोह आर्य समाज (वैदिक मिशन) वेस्टमिड्लैंड्स यू.के. के स्वामी श्रद्धानन्द भवन में पूर्ण राष्ट्रीय भक्ति-भाव तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । सर्वप्रथम वैदिक संस्कृति के अनुरुप भारतीय गणतंत्र दिवस की सफलता के लिये आर्य समाज की पवित्र यज्ञशाला में धर्माचार्य डॉ. उमेश यादव जी द्वारा राष्ट्र एवं श्री राम के भक्त श्री जोगिन्दर पाल सेठी के यजमानत्व में देवयज्ञ(अग्निहोत्र) सम्पन्न करवाया गया जिसमें परिवार, समाज व राष्ट्र के विकास तथा उक्त कार्यक्रम-समारोह की सफलतार्थ परमपिता परमेश्वर से आचार्यश्री के द्वारा प्रार्थना की गयी । तदुपरान्त सभी उपस्थित स्त्री-पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द भवन में एकत्रित हुये ।

वैदिक परम्परानुसार राष्ट्रीय भावनाओं से युक्त वेदमंत्र का उच्चारण करके समारोह के मुख्यातिथि डॉ. शशाँक विक्रम सिंह, प्रधान, भारतीय दूतावास, बर्मिंघम के करकमलों से श्रद्धेय आचार्य जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया जिसमें आर्य समाज के ट्रस्टीगण क्रमश: डॉ. पुरुषोत्तम दास गुप्ता, डॉ. उमेश चन्द्र कथुरिआ, श्री रवीन्द्र रेणुकुंटा, श्री विनोद गुलाटी, श्री विजय कुमार और साथ ही आर्य प्रतिनिधि सभा यू.के. के सदस्य श्री नवीन गणपत आर्य (क्रॉयडन), वेस्टमिड्लैंड्स पुलिस विभाग के पदाधिकारी श्री बलजीत सिद्धु, कम्यूनिटि कोन्हिसन अधिकारी श्री रमेश शर्मा एवं समारोह के स्पोंसर व राष्ट्रीय हवन के यजमान श्री जोगिन्द्र पाल सेठी ने ध्वजारोहण (तिरंगा ध्वज) में सहभागिता निभायी । राष्ट्रीय गान में सभी उपस्थित जनता ने डॉ. मोना खुराना एवं पल्लवी पाण्ड्या के नेतृत्व-स्वर के साथ भाग लिया ।

सर्वप्रथम श्री रवीन्द्र रेणुकुंटा ने आर्य समाज बोर्ड ऑफ ट्रस्ट की ओर से मुख्यातिथि, अन्य विशेष अतिथिगण एवं समारोह में उपस्थित सभी भाई-बहनों के स्वागत में अपना सम्बोधन उपस्थित किया । उन्होंने समारोह में उपस्थित होने के लिये आये सभी युवाओं तथा विशेषकर भाग लेने वाले संगीत व नृत्य कलाकारों का अभिनन्दन किया । तत्पश्चात् कार्यक्रमानुसार जहाँ पल्लवी पाण्ड्या, डॉ. मोना खुराना, श्री सुकेतु यादव, श्री विनोद शर्मा ने राष्ट्र-प्रेम से ओत-प्रोत मधुर गीत गाये, वहीं पराञ्जल भटनागर, अनिशा मयूर, सुभांगी मयूर तथा मिल्ली कालिया ने एक अत्यन्त मनमोहक सामूहिक रुप से सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत किया ।

इस समारोह के मुख्य-अतिथि डॉ. शशाँक विक्रम सिंह ने अपने उद्बोधन में आधुनिक समय में भी आर्य समाज के राष्ट्रीय मूल्यों को बढ़ाने की जरुरत पर बल दिया और बताया कि जैसे आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द की प्रेरणा से देश-विदेश में वसते हुये आर्य वीरों ने अपने वलिदानों से स्वराज्य का महत्त्व देकर भारत वर्ष को आजाद करवाया था, उसी तरह स्वदेश के मूल्यों को सब मिलकर आज भी आगे बढ़ाने में बढ़चढ़ कर भाग लें । उन्होंने अपने भाषण में भारत वर्ष की गरिमा पर प्रकाश डाला और वर्त्तमान सरकार द्वारा किये जा रहे भारतवर्ष के कई प्रकार के विकास-कार्यों की चर्चा की । अपने सम्बोधन में आर्य समाज वेस्टमिड्लैंड्स के प्रधान डॉ. नरेन्द्र कुमार के अस्वस्थ होने के कारण उनकी अनुपस्थिति पर उनके शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ के लिये शुभकामनायें दीं और इसके लिये ईश्वर से प्रार्थना भी की । उन्होंने इस अवसर पर भारतवर्ष के ७५ वर्ष की स्वाधीनता पूरा होने पर भारत-सरकार द्वारा घोषित राष्ट्रीय अमृतवर्ष की शुभकामना भी दी ।

श्रीमती बृजबाला दुग्गल भी अस्वस्थ होने के कारण समारोह में आ नहीं सकीं तो

उनके द्वारा भेजे हुए राष्ट्रीय भाषण को श्री रवीन्द्र रेणुकुंटा जी ने पढ़कर सुनाया तथा उनके तथा प्रधान जी के अच्छे स्वास्थ्य की शुभकामनाएं कीं ।

इस राष्ट्रीय पर्व पर संस्था के मिनिस्टर ऑफ रेलिजन आचार्य डॉ. उमेश यादव जी ने अपने उद्बोधन में वैदिक दृष्टि से राष्ट की गरिमा, राष्ट्र का धर्म, कर्त्तव्य पालन और सब में श्रेष्ठ चरित्र का विकास होता रहे जिससे भारतवर्ष की उन्नति सदैव संसारभर में शिखर पर रहे, ऐसी प्रेरणाओं के साथ अपनी एक कविता का भी गायन किया जिससे सभी उपस्थित श्रोताओं के मन को राष्ट्र-भक्ति के रंग में रंग दिया । भारतीय स्वाधीनता में आर्य समाज के लगभग ८०% योगदान के महत्त्व को बतलाते हुये मानों उपस्थित लोगों में क्रांति की भावना जगायी और बताया कि इस विषय पर तैयार पुस्तक जल्दी ही हमारे बीच आने वाली है जो संस्था प्रधान डॉ. नरेन्द्र कुमार के साथ मिलकर लिखी गई है । आचार्य श्री ने मुख्यातिथि को पुष्प-गुच्छे और वैदिक पुस्तकें देकर सम्मानित किया वहीं संस्था के सभी उपस्थित ट्रस्टियों ने आये अन्य अतिथिगण श्री नवीन गणपत आर्य, पुलिस सुप्रिटेंडेंट श्री बलजीत सिद्धु तथा साथ आये श्री रमेश शर्मा जी का भी संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तकों को भेंट कर उनका अभिनन्दन किया ।

समारोह के अन्त में श्री विनोद गुलाटी ने मुख्यातिथि, अन्य अतिथि, भागलेने वाले सभी कलाकार, उपस्थित् जनता तथा कार्यक्रम में सेवा देने वाले सभी सेवा-दल (वुलिन्टियर्स) का हार्दिक धन्यवाद किया । मंचसंचालन का कार्य अत्यन्त सुचारुतरीके से श्री विजय कुमार ने किया । सेवा-दल में विशेषकर श्री परिमल सोमानी, विजय कुमार, वीना देवी कुमार, आचार्य उमेश जी और श्रीमती शांति कुमारी रहे और अपना भरपूर योगदान दिया । भोजन परोसने में श्री जोगिन्दर पाल सेठी के बच्चे भी बड़े उत्साह से लगे रहे ।

शांति पाठ के साथ समारोह का समापन हुआ तथा भोजन-मंत्र पाठ के साथ सह प्रीति-भोज (ऋषि-लंगर) के लिये सभी लोगों को स्वामी दयानन्द सरस्वती भवन में चलने के लिये निवेदन किया गया । वहाँ सबने बहुत ही प्रेम से ऋषिलंगर छका । इत्योम् शम् ।

Volunteers and Youth Involvement Meeting at Arya Samaj Bhavan

Om Seva Yuva Mandal, Arya Samaj WM U.K.`s 2nd meeting was held on 20th February at 2-4pm in Swami Shraddhanand Hall. This meeting is held every month to encourage the youth to take more interest in the activities that take place at Arya Samaj.

The meeting started with chanting of Gayatri Mantra. Following which, Mr. Vijay Kumar emphasised that we should always show interest in spreading vedic true knowledge. Our motto is to carry on SEVA, SVADHYAY AND SATSANG, we should all participate in Arya Samaj activities set up for the benefit of our people.

Acharya Dr. Umesh Yadav, Minister of Religion shared some experiences of his life when he was in India and gave his ideas of how to encourage youth. We need to create some interesting activities for them like quiz-programme, Chanting of Mantras, listening to their views and holding discussions.
Mrs. Brij Bala Duggal explained that we already celebrate events and functions at Arya Samaj where children should be encouraged to come forward and participate. Miss Raji Chauhan reminded us to continue sending our message in our Bulletin and weekly announcements to get more volunteers to come forward. We should also talk to people to get them involved.

In the meeting, it was mentioned that Mr. Naveen Ganpat Arya (Croydon) has agreed to work on computerising our library-books-list.
Dr. Mona Khurana has volunteered to help with our Social Media Platforms.

Mrs. Veena Devi shared her views to arrange monthly Bhajan Sandhya and need to inspire the youth to join these sessions.
It was decided that next meeting will take place on 20th March 2022 Sunday on 1pm.

With Shanti Path, meeting got finished.

Children's Corner

The Greedy Jackal

A lazy jackal was once passing through the forest hills. From a distance, he saw a hunter and a wild boar fighting each other. The hunter aimed an arrow at the boar but missed his target.

Furious, the boar charged at the hunter. But before the boar could reach him, the hunter aimed another arrow at the boar. The arrow struck the boar, injuring him. The boar collided with the hunter and killed him. After sometime, the boar died due to his wound.

Watching all this, the jackal thought to himself, “What a great feast this is! It will last for days”.

Being greedy, he started licking the bowstring too, which was covered in meat and blood. As he tried to eat the meat on the bowstring, it snapped. A sharp edge pierced the jackal’s mouth and brain. The greedy jackal bled to death.

Moral of the Story: Greed is harmful

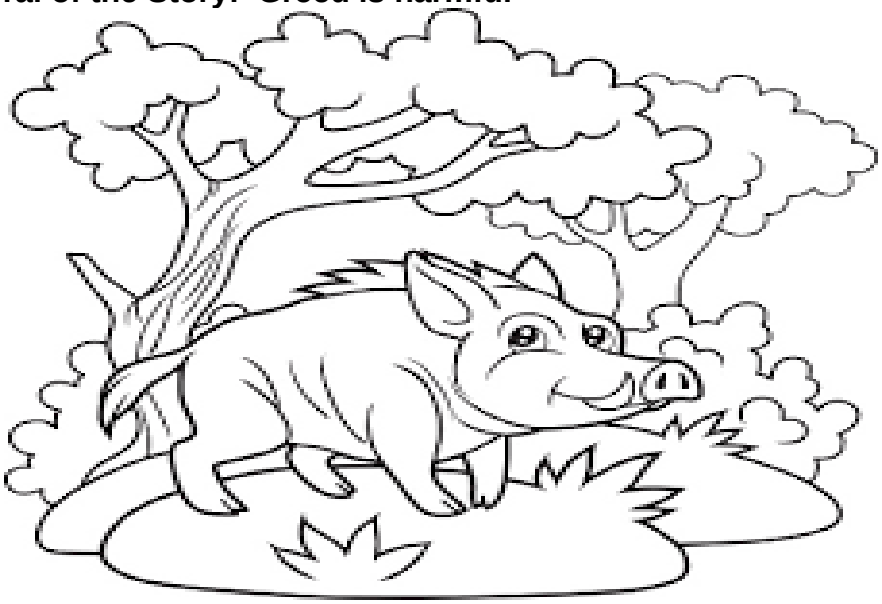

Fee for services provided by Arya Samaj West Midlands

Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on 0121 359 7727 for more information -

- Ordinary membership fee is £20 for 12 months & Life membership is £500 paid once.
- Renewal for ordinary members of ASWM will get reminder letter for their membership fee of £20 each year.
- Matrimonial Service - £90 for 12 months
- Hire of our hall –
  - Maharishi Dayanand Hall and Swami Shraddhanand Hall – Members and friends can hire hall for celebration of birthday etc, as long as you do not drink alcohol and eat meat. We ask for a donation to cover electricity, gas and cleaning expenses. Please call 0121 359 7727 to book your event.

Donations to Arya Samaj for Priest Service.

- Marriage Ceremony performed by our priest - £400.
- Havan performed at home by our priest –
  - Birmingham and Surrounding Areas - £51
  - 12 Miles Outside of Birmingham - £101
- Cremation & Shanti Havan performed by our priest –
  - Birmingham and Surrounding Areas - £200
  - 12 Miles Outside of Birmingham - £250
  - Shanti Havan at Arya Samaj after cremation - £200

Note – Arya Samaj policy – All fees for Sacraments and Cermation are paid within 7 days.

News

Please note

Car Parking for members on Sunday Congregation can safely park their cars on Rookery Road where there is SINGLE YELLOW LINE.

Condolences:

- Mr Sukesh Nischal and Mrs Ritu Nischal and family - for the loss of thier beloved parents Mrs Surat Nischal (mother 81) passed away on 2nd January 2022 and Mr Krishan Lal Nischal (father 81) passed away on 7th January 2022. We pray to Almighty God to give Sadgati to both their soul and strength to the family to cope with their loss.
- Mr Dinesh Joshi, Mr Sanjiv Joshi and family – for the loss of their beloved mother Mrs Rama Rani Joshi (83) who passed away on 17th February 2022. Mrs Joshi was member of Arya Samaj and will be missed by all. We pray to Almighty God to give Sadgati to her soul and strength to the family to cope with their loss.

Congratulations:

- Miss Sanum Jain and family – Havan on 12th February 2022 for Grih Pravesh. Wishing happiness in new home.

Thank You:

- Mr and Mrs Kuku Oberai for sponsoring langar on 27th February 2022 at our Arya Samaj Bhavan for a visit from HSS child.

Donations to Arya Samaj West Midland through the Priest-Services:

- Mr Sukesh Nischal £200
- Miss Sanum Jain £101

Donations:

- Mr Santhana Kannan £501
  (In memory of Mr Krishan Nischal & Mrs Surat Nischal)
- Ms Monica Toor £440
- Mrs Ritu Nischal £150
- Mr Naveen Ganpat £101
- Mrs Nirmal Prinja £100
  (In memory of her beloved husnand Mr Satya Dev Prinja)
- Dr Avind Sharma £81
- Mr Gyan Chand Farmah £51
- Mrs Anita Rastogi £51
- **(In memory of her beloved mother Dr Renu Ratogi)**
- Dr Singara Singh Khela £10
- Miss Charu Malhotra £10
- Dr Ranjit Prasad £10

Many congratulations to all the mentioned families who have had auspicious havan at their residences, on different occasions Or Sunday Vedic Satsangs in Arya Samaj Bhavan.

We need more of our members to donate monthly/yearly.

We need to expand our list of generous monthly/yearly donors list to financially support our Arya Samaj in future.

At present we are receiving about £300 of regular donations every month. We need to increase to £500 a month at least in near future.

About 25 of our members are already donating regularly. We are grateful to them and thank them for their generosity.

Please get in touch with Arya Samaj office or donate directly into Arya Samaj Bank account as below by setting up a monthly standing order.

Bank Transfer – The Co-operative Bank
Name of account – Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands
Account number – 65839135 Sort Code – 08.92.99

Once you have donated online, please let us know by email or phone.

Your help is highly appreciated. Thank you.

EMERGENCY FUNDING FOR TOWER

Name	Amount
Dr Narendra & Mrs Shama Kumar	£2000
Mr Joginder Pal and Mrs Santosh Sethi	£1100
Dr Umesh Kathuria & Dr Subash Kathuria	£1001
Dr Saroj Adlakha	£1000
Dr & Mrs Shail Agarwal	£1000
Mrs S Bhandari	£1000
Mr Ved Parkash Rawal	£1000
Dr Vijay and Mrs Archna Bathla	£1000
Dr Anil and Mrs Urvind Kohli	£1000
Mrs Rama Joshi	£500
Mrs Rama Joshi	£501
Dr Narendra Patel	£501
Mr Swaraj and Vijay Kumar	£301
Anonymous	£201
Dr Satya Vrat Sharma	£200
Mr Vinod Gulati	£200
Mrs Usha Khosla	£151
Mrs Suraksh Soni	£125
Mr Surinder Julka	£101
Dr Smita Mehra	£101
Dr Chetan Varma	£101
Mr Krishan Khurana	£101
Ms Anita Rastogi	£101
Mr Raj Joye	£101
Mr Ashok Panday	£101
Mr Parimal Somani	£101
Mrs Nirmal Prinja	£100
Mr Ashok & Mrs Sunita Bakshi	£100

Members who pay donations by standing order

Name	Amount	Payment
Mrs Kanti Bajaj and Family	£250	Yearly
Mr V.P Rawal	£121	Yearly
Mr Parimal Somani	£120	Yearly
Dr Vivek Gulati	£101	Yearly
Dr Narendra & Mrs Shama Kumar	£81	Yearly
Dr Chetan Varma	£30	Monthly
Dr P.D. Gupta	£21	Monthly
Dr Narendra & Mrs Shama Kumar	£20	Monthly
Mr Varinder Bahal	£15	Monthly
Mrs Nirmal Prinja	£15	Monthly
Dr Umesh Kathuria & Dr Subash Kathuria	£15	Monthly
Mr Vinod Gulati	£10	Monthly
Mr Alok Yadav	£10	Monthly
Mr Jatender Vatta	£10	Monthly
Mr Madan Mohan Sharma	£10	Monthly
Mr Ravinder Renukunta	£10	Monthly
Mrs Sushma Grover	£10	Monthly
Mr Medharthee Rathore Arya	£10	Monthly
Dr M D Agarwal	£10	Monthly
Mr Anand Vrat & Mrs Renuka Chandan	£10	Monthly
Mr Rajive Bali	£10	Monthly
Mr P Puttyah	£10	Monthly
Mr Joginder Pal Sethi	£10	Monthly
Mr Krishan Chand Talwar	£10	Monthly
Mr Swaraj Kumar & Mrs Vijay Luxmi	£8.50	Monthly
Mr Vipul Mistry	£5.25	Monthly
Mr Amit Khanna	£5.00	Monthly
Mr Vijay Kumar	£5	Monthly

Thank you for all your donations we are very grateful!

Weekly services details
(NEW ZOOM DETAILS FOR 2022)

Please share with family & friends

Wednesday Day Centre – only at Bhavan

Time: 12pm – 3pm

Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yog and Pranayam. We will offer Tea/Coffee and biscuits free of cost. Those members who would like to have Lunch, we will try to provide lunch at the cost charged by caterer to us.

Wednesday Sanskrit Learning – via zoom only

Time: 08:00pm – 9pm

Every week from Wednesday 5th January 2022, until March 30th 2022. New ID will be sent out in April 2022

Join Zoom Meeting
https://us06web.zoom.us/j/81102745053?pwd=QTM2VVE0ZWJCTTRCRHFpbzMzSnQ0Zz09

Meeting ID: 811 0274 5053

Passcode: Vedic2

Thursday Yog Class – NEW TIME

Time: 06:00pm – 7pm

Every week from Thursday 6th January 2022, until March 31st 2022. New ID will be sent out in April 2022

Join Zoom Meeting
https://us06web.zoom.us/j/89396895025?pwd=Y29yNnk0cyt1dy9kY1hlV1VTdkdUUT09

Meeting ID: 893 9689 5025

Passcode: Vedic2

Sunday Havan and Satsang

Time: 11:00am – 1pm - followed by Rishi Langer

Every week from Sunday 2nd January 2022, until March 27th, 2022. New ID will be sent out in April 2022

Join Zoom Meeting
https://us06web.zoom.us/j/83133435231?pwd=eUxkQW5wL1VGazd6b3lJQ0tCUWo1UT09

Meeting ID: 831 3343 5231

Passcode: 297503

If you would like the zoom links sent to your mobile or email please email us on enquiries@arya-samaj.org. We will need your email address or mobile number and we can add you to the list.

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted, please inform the office.

0121 359 7727

Member or non-member wishing to be sponsor Yajman in the Sunday congregation at Arya Samaj. Please call 0121 359 7727

If you are not having any symptom of Covid-19, we request you to start attending Sunday Congregation, Yog Class & other events we will hold this year at Arya Samaj Bhavan. But for the benefit of those members who can not come to Bhavan we will continue providing our services on Zoom.

MEETING FOR VOLUNTEERS

We are holding our **3rd** Meeting for Volunteers to attend on **Sunday 20th March 2022**

Time: - 1:00 p.m. – 3:00 p.m.

Venue: - The meeting will take place in Our Arya Samaj's Bhavan
This meeting will be hosted by Mr Vijay Kumar, Mr Vinod Gulati Ji, Miss Raji Chauhan, Acharya Dr. Umesh Yadav Ji and Mrs. B.B. Duggal.

Topic: YOUTH ACTIVITIES & 'SEWA' TASKS - Most Charity Organizations have volunteers who help with simple tasks during organisations activities. If you can offer to do 'Seva' even if it is once a week or month for 2 - 3 hours, it would be helpful. Even if you cannot commit to giving time at present, please do attend so that we can hear your views.

We know that most of you would like to help and support but quite often people do not know what help is needed and when. We have made a list of activities and it will be shared with you in the meeting.

We look forward to meeting with you and may we take this opportunity to thank you for your support.

AUM SEWA YUVA MANDAL - ARYA SAMAJ (VEDIC MISSION) WM

YOUR ARYA SAMAJ IS HERE TO HELP IN "YOUR HOUR OF NEED"

Your Arya Samaj is here to help you in your hour of need.

Please get in touch with us. Our Acharya ji, Shri Umesh Yadav, is a resident priest and lives in our Arya Samaj Bhavan.

You can contact him by phoning on 0121 3597727 or emailing on enquiries@arya-samaj.org

If Acharya Ji is not available to answer your phone, please leave a message with your full name, telephone number and briefly about your problem. It will be answered soon.

Please do not suffer alone. Talk to us. We exist to support our members and friends, especially when they are in any kind of trouble.

So please remember us in "Your Hour of Need".